C.W
[redacted]

paper I
Ancient India
Date:- 17.02.2022

Dr Deepak Kumar Ranjan
Guest professor,
S.R.A.P College, Chakia

हर्षवर्धन : सांस्कृतिक योगदान

हर्षवर्धन ने जिस प्रकार राजनीतिक स्तर पर एक सफल शासक की भूमिका निभाई। उसी तरह उसने सांस्कृतिक उत्थान के लिये प्रयास किए। अपने शासन काल में उसने शिक्षा, साहित्य, कला एवं धार्मिक सहिष्णुता के उत्थान के अनेकानेक प्रयास किया।

सोनीपत के तांबे की मुद्रा तथा मधुबन शिलालेख से ज्ञात होता है कि हर्ष के पूर्वज सूर्योपासक थे। हर्ष भी अपने जीवन के प्रारंभिक काल में शैव धर्म को मानता था। बांसखेड़ा ताम्रपत्र तथा नालंदा एवं सोनीपत से प्राप्त मुद्रा में उसे महेश्वर कहा गया है। आगे ह्वेनसांग के प्रभाव से उसने बौद्ध धर्म के महायान शाखा को अपनाया तथा जीवन के अंत तक वह इस धर्म का अनुयायी बना रहा। परन्तु इसके इस व्यक्तिगत धर्म का राजकीय धर्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इस समय उसका राजकीय धर्म था सर्वधर्म समभाव। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उसने सभी धर्मों तथा पंथों को समान संरक्षण दिया।

हर्षवर्धन की रुचि शिक्षा तथा साहित्य के विकास में भी रही। अपने राज्य में उसने अनेक शिक्षा केन्द्रों के विकास में आर्थिक सहयोग दिया। नालंदा विश्वविद्यालय के संचालन के लिये उसने लगभग 100 गाँव अनुदान में दिये थे। हर्षवर्धन के दरबार में क्लासिकल संस्कृत का विकास हुआ। वह स्वयं भी एक विद्वान था। उसे ही रत्नावली, प्रियदर्शिका, तथा नागानंद जैसे ग्रंथों की रचना का श्रेय दिया जाता है। वह विद्वानों का महान संरक्षक था। बाणभट्ट, मयूर, तथा मातंग दिवाकर आदि उसके दरबार के महत्वपूर्ण विद्वान थे। बाणभट्ट उनका दरबारी कवि था। उन्होंने हर्षचरित तथा कादम्बरी की रचना की। मयूर ने 'सूर्यशतक' नाम से

सौ श्लोकों का संग्रह किया। मातंगदिवाकर की
किसी रचना के बारे में ज्ञात नहीं हो पाता है।

ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन के लोक-
कल्याणकारी कार्यों का भी वर्णन किया है जिसमें उसके उल्लेख
किया है कि हर्ष ने सड़कों की सुरक्षा का प्रबंध किया तथा
इसके लिये पुलिस तथा गुप्तचर की व्यवस्था की। यात्रियों
की सुविधा के लिए उसने जगह-जगह विश्रामालय भी
बनवाये। यद्यपि इसी काल में राजकीय यात्री ह्वेनसांग
के दो बार लूटने का उल्लेख भी उसके यात्रा विवरण
में मिला है। इसका कारण माना जा सकता है कि अन्य क्षेत्रीय
राज्यों में कानून व्यवस्था की समस्या होगी। हर्ष को एक
महान निर्माता भी माना जाता है उसके काल में अनेक
विहार, चैत्य एवं मंदिरों का निर्माण किया गया। हर्ष
ने कन्नौज की सभा में भव्य बुद्ध मूर्ति को प्रतिष्ठित
किया। आधुनिक शाहाबाद ~~जिसमें~~ जिले के मुण्डेश्वरी
का अष्टकोणिक मंदिर, रामपुर जिले के राम-लक्ष्मण
मंदिर, कन्नौज का देवाराम तथा नालंदा में 100 फीट
ऊँचा पीतल के विहार का निर्माण का श्रेय हर्ष को ही
है।

उसकी दानशीलता की प्रशंसा तो चीनी
यात्री करता है। ह्वेनसांग के विवरण से बोध होता
है कि वह प्रत्येक पाँच वर्ष में वर्तमान उत्तर प्रदेश
के प्रयाग में एक धर्म संसद का आयोजन करता
था जिसमें वह सारा धन को दान कर देता था
इस प्रकार वह एक प्रकार से ~~अपरि~~ अपरिग्रह
के सिद्धांत का संदेश प्रजा को देता था। इस
प्रकार हर्ष अपने काल का विलक्षण सांस्कृतिक
व्यक्तित्व के रूप में सामने आता है।

C.W.

B.A - paper - III
Madival India

Date - 17.02.2022

Dr Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P. College
MUZ

सल्तनत कालीन भू-राजस्व प्रशासन

प्राचीन काल से ही भारत में भू-राजस्व के निर्धारण में भूमि-माप की पद्धति कायम रही थी। किन्तु आगे चलकर जब राज्य का नियंत्रण कमजोर हुआ तो भूमि-माप की पद्धति छूट गयी थी। फिर जब तुर्कों का आगमन हुआ तो आरम्भ में इन्होंने कोई स्पष्ट भू-राजस्व पद्धति का विकास नहीं किया अपितु वे एक तरह से प्रबन्धन के माध्यम से राजाओं से, हिन्दू भू-राजस्व की वसूली करते रहे। इक्ता बनाकर उससे कुलीन वर्ग द्वारा एक सैनिक राशि प्राप्त करता रहा एक वार्षिक नजराना की। अब भी हिन्दू कुलीनों का इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में वर्चस्व बना रहा तथा भू-राजस्व व्यवस्था का बटाई पद्धति प्रचलित रही। उसमें भी कई प्रकार की बटाई तथा कनकूत बटाई आदि के लिए नसक गल्ला बख्शी।

किन्तु जब राज्य की आवश्यकता बढ़ी एवं अब प्रशासनिक तथा सैनिक खर्च में वृद्धि हुई तो फिर राजस्व की यह रकम अपर्याप्त पड़ने लगी। अतः अलाउद्दीन खिलजी ने दोआब क्षेत्र भू-राजस्व को कम करने के लिए 'मुसाहत' की पद्धति लागू की तथा इसके माध्यम से किसानों के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित करना चाहा। आगे M.BT ने भूमि कि पैमाइश की पद्धति को महत्व दिया तथा साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों में इसका विस्तार करना चाहा। यद्यपि अन्य सुल्तानों ने इस पद्धति को अपनाने में अधिक दिलचस्पी नहीं दिखाई। एक दृष्टि से देखा जाए तो मसाहत पद्धति का विकास भी प्रशासनिक केन्द्रीकरण में एक कारक बन गया है।